

उनके बीच में अनेक टापू बन जाते हैं, नदी के इस रूप को गुंफित नदी कहते हैं।

3. **अपरदन कार्य** – महाखड्ड, 'V' आकृति की घाटी, विसर्प, कैनयन, जलप्रपात।
निक्षेपण कार्य – विसर्प, बाढ़कृत मैदान, जलोढ़ पंख।
4. (क) **गोखुर झील** – नदी के मध्य मार्ग में बिसर्प बन जाते हैं। समय बीतने पर दो मोड़ों के बीच की भूमि की पट्टी धीरे-धीरे संकरी होती जाती है और एक समय ऐसा आता है, जब नदी इस संकरी पट्टी को काट कर सीधी बहने लगती है। इस प्रकार विसर्प का नदी की मुख्य धारा से संबंध टूट जाता है और विसर्प एक गोखुर झील में बदल जाता है।
(ख) **डेल्टा** – नदी मुहाने पर त्रिभुज जैसी आकृति वाली भूमि जो, नदियों द्वारा लाए गए अवसादों के 'निक्षेपण' से बनती है। इसमें होकर अनेक वितरिका नदियाँ बहती हैं।
5. तल संतुलन के कारणों में नदी सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। नदी मार्ग के तीन भाग हैं। यह अपने मार्ग के तीनों ही भागों में तल संतुलन का कार्य करती रहती है।
ऊपरी मार्ग – महाखड्ड, जलप्रपात, और केनयन का निर्माण।
मध्य मार्ग – विसर्प और जलोढ़ पंखों का निर्माण।
निचला मार्ग – विसर्प, बाढ़कृत मैदान, गुंफित नदी, गोखुर झील, डेल्टा, और ज्वार नद मुख का निर्माण।
6. (क) **भूमिगत जल** – वर्षा के जल का वह भाग जो भूमि के अंदर रिसकर एकत्र हो जाता है, भूमिगत जल कहलाता है।
(ख) चूने की शैलों से बने प्रदेशों में अनेक घोलरंध्र और विलय रंध्र पाए जाते हैं। नदियाँ इन रंध्रों में प्रवेश कर जाती हैं और सतही प्रवाह भूमिगत हो जाता है। इस प्रकार चूने की शैलों से बने प्रदेशों में नदियाँ भूमिगत हो जाती हैं।
(ग) जिन प्रदेशों में घोलरंध्र तथा विलयरंध्र अधिक संख्या में पाए जाते हैं, वहाँ सड़कें तथा रेलवे मार्ग बनाना कठिन होता है, क्योंकि ऐसे प्रदेशों में भूमि की सतह नीचे को धंस जाती है।
(घ) **स्थायी भूमिगत जल स्तर**: यह धरातल के नीचे जल का वह तल है, जिससे नीचे भूमिगत जल स्तर कभी नहीं जाता। यह भूमिगत जलस्तर ऋतु परिवर्तन से भी अप्रभावित रहता है। इस गहराई तक खोदे गए कुएँ कभी नहीं सूखते।

अस्थायी भूमिगत जलस्तर : कुछ प्रदेशों में भूमिगत जल स्तर स्थायी नहीं होता



टिप्पणी